**पांडिचेरी में प्रस्तावित केन्द्रीय विश्वविद्यालय का नाम श्री अरविन्द घोष के नाम पर रखा जाना**

*24. **श्री सत्य प्रकाश मालवीय** : क्या **शिक्षा** मंत्री 15 मई, 1985 को राज्य सभा में अतारांकित प्रश्न 1583 के दिये गये उत्तर को देखेंगे और यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या पांडिचेरी में प्रस्तावित केन्द्रीय विश्वविद्यालय का नाम महर्षि अरविन्द घोष के नाम पर रखे जाने का विचार है और यदि हां, तो इस संबंध में औपचारिक घोषणा कब तक किये जाने की संभावना है ; और

(ख) यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं ?

**शिक्षा मंत्री (श्री के० सी० पन्त)** : (क) और (ख) "पांडिचेरी विश्वविद्यालय" के नाम से एक विश्वविद्यालय खोलने से सम्बंधित एक विधेयक सभा में 21 मई, 1985 को पहले ही पेश कर दिया गया है। विधेयक में इस बात की भी व्यवस्था है कि विश्वविद्यालय "श्री अरविन्द पूर्वी तथा पश्चिमी विचारधारा का स्कूल" के नाम से विख्यात पूर्वी तथा पश्चिमी विचारधारा में अध्ययन करने के लिए एक स्कूल स्थापित करेगा।

**श्री सत्य प्रकाश मालवीय** : पिछले सत्र में नये विश्वविद्यालय खोलने के लिये विधेयक प्रस्तुत किये गये थे। एक विधेयक था राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के सम्बन्ध में और दूसरा विधेयक था पांडिचेरी में विश्वविद्यालय खोलने के लिए तो सरकार ने यह निर्णय लिया है कि जो राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय है यह श्रीमती इन्दिरा गांधी के नाम पर रखा जायेगा और यह विश्वविद्यालय दिल्ली में खोला जायेगा और पांडिचेरी में जो विश्वविद्यालय है इसके लिये निर्णय लिया गया है कि यह पांडिचेरी में ही खोला जायेगा तो मंत्री जी यह बताने की कृपा करें कि क्या वजह है कि जो मुक्त विश्वविद्यालय दिल्ली में खोला जा रहा है वह एक व्यक्ति के नाम पर है। लेकिन पांडिचेरी में जो विश्वविद्यालय खोला जा रहा है उस का नाम महर्षि अरविन्द घोष के नाम से क्यों नहीं खोला जा रहा है ?

**श्री के० सी० पन्त** : सभापति जी, इन दोनों का कोई सम्बन्ध तो है नहीं। लेकिन पांडिचेरी के सम्बन्ध में बहुत से लोगों की यह राय है कि अरविन्दो के नाम से यह विश्वविद्यालय होना चाहिये और शुरू में इस तरह की राय व्यक्त भी की गई लेकिन साथ-साथ जब यह मालूम हुआ कि यह विश्वविद्यालय स्थापित होने जा रहा है तो उन वहां पांडिचेरी में रहने वाले कई लोगों की यह राय थी कि सुब्रह्मण्यम भारती के नाम से यह हो। इसलिये एक वाद-विवाद का प्रश्न यह बन गया। अब उसमें यह आवश्यक था कि ऐसा हल निकाला जाये जिससे यह दोनों हस्तियों का जो स्थान है देश के समाज में, इतिहास में उसको नीचे न खींचा जाये, उसको वाद-विवाद का विषय न बनाया जाये। इसलिये आखिर में यह फैसला हुआ कि पांडिचेरी विश्वविद्यालय ही इसका नाम रख दिया जाये। लेकिन एक अरविन्दो के नाम से खोला जाये जिसकी मैंने चर्चा की और दूसरा सुब्रह्मण्यम भारती के नाम से खोला जाये। दो स्कूल वहां खोले जायेंगे। सबका आदर हो इस दृष्टि से यह फैसला लिया गया।

**श्री सत्य प्रकाश मालवीय** : मेरा प्रश्न स्कूल के सम्बन्ध में नहीं है। यह विधेयक में प्रावधान है ही। पांडिचेरी में जो विश्वविद्यालय खोला जा रहा है उस सम्बन्ध में विधेयक इस सदन के समक्ष प्रस्तुत किया जायेगा, उस पर विचार होगा। तो मैं मंत्री जी से यह पूछना चाहूंगा कि क्या इस सिलसिले में कोई वहां पर रायजनी की गई थी ? मंत्री जी ने कहा कि शुरू में इरादा महर्षि अरविन्द के नाम से खोलने का था, लेकिन बाद में कुछ लोगों ने राय दी कि श्री सुब्रह्मण्यम जी के नाम से खोला जाये। इसलिए यह वाद-विवाद का विषय न बने, अब यह नाम दिया गया। मेरा प्रश्न दोनों विश्वविद्यालयों के संबंध में है कि क्या सरकार ने इस बारे में कोई रायजनी की थी ?

**श्री के० सी० पन्त** : यह तो एक ही विश्वविद्यालय का प्रश्न है । दूसरा जब यहां पर आएगा तो तब उस पर बहस होगी । इसके संबंध में मैंने जो कहा था वह यह कहा कि यह वाद-विवाद वर्षों तक चला और यह बात रुक गई । जब श्री अरविन्द की शताब्दी थी, सन् 1971 में या 1972 में, उस वक्त इसकी शुरूवात हुई । सन 1970 में एक नेशनल कमेटी बनी, उसने भी राय दी । तब से यह मामला चला आया और काम रुक गया । इसमें कुछ आर्थिक कठिनाइयां भी थीं । इस वाद-विवाद की वजह से बहुत विलम्ब हुआ । इसलिए यह सोचा गया कि कहीं न कहीं बात किनारे पर पहुंचनी चाहिए ताकि विश्वविद्यालय बन सके । इसलिए यह फैसला लिया गया ।

SHRI K. MOHANAN: Sir, naming university after great personalities is a fashion of today. Through this naming instead of honouring these great personalities we are abusing them and tarnishing their names. For example, in Kerala recently a university has been started in the name of our Father of the Nation. The university centre is now working on the first floor of a shopping complex. The foundation stone laid by the great President of this country is resting in peace one of the latrines of the shopping complex. In this way, without proper preparation unversities are being opened like tea shops. Will the Minister take necessary steps to discourage this trend of opening of universities like tutorial colleges, tea shops or barber shops, and naming them after Mahatma Gandhi or Indira Gandhi or Pt. Jawaharlal Nehru, after these great personalities without proper preparation? Will the Government take necessary steps to discourage this trend in the education field?

SHRI K. C. PANT: Education bill is not under discussion here. This is only in respect of this particular university. And here no name is associated with the university. It is called the Pondicherry University.

The other point, I have taken note of.

SHRI GURUDAS DAS GUPTA: We saw reports in the press that the Government is contemplating to set up a Central university in West Bengal. There is also a report in the press...

MR. CHAIRMAN: Not relevant. Mr. Prashant.

SHRI DHARAM CHANDER PRASHANT: Sir, in our country there are universities named after personalities, like the Dayanand University, the Nanak University and the Dr. Sampurnanand University. If there are suggestions to name it after Aurobindo Ghosh and Subramania Bharati to solve this contoversy I suggest that there should be combination of the two names. It should be Aurobindo Subramania University. That will be worthwhile.

MR. CHAIRMAN: All right. That is a suggestion.

SHRI K. C. PANT: May I give one piece of information? An International Institute of Educational Research is also being established at Auroville in commemoration of Shri Aurobindo. This is just an additional piece of information.

MR. CHAIRMAN: Mr. Yadav, Do you want to put a supplementary?

**श्री हुक्मदेव नारायण यादव** : श्रीमन्, मैं क्वेश्चन के संबंध में ही राय बता रहा था । मैं यह कहना चाहता हूं कि विश्वविद्यालय खोलने के संबंध में निर्णय सरकार को करना पड़ता है और मजबूत इरादे का भी कभी-कभी आभास देना पड़ता है । किसी महापुरुष के नाम से जब कोई विश्वविद्यालय खोला जाता है तो कहीं न कहीं कुछ विवाद खड़ा हो ही जाता है और जब विवाद चलता है तो सरकार भी जानकर वाद-विवाद बढ़ा देती है । मैं सरकार से यह जानना चाहता

हूं कि जब महर्षि अरविन्द और दूसरे महापुरुष के नाम से विवाद खड़ा हुआ तो शुरू में सरकार का इरादा था कि यह विश्वविद्यालय महर्षि अरविन्द के नाम से खोला जाय, तो लोगों के द्वारा अगर विवाद खड़ा किया जाता है तो उस विवाद को बढ़ाना नहीं चाहिए और सरकार को अरविन्दु घोष के नाम से ही इसको खोलना चाहिए और इस बात को आगे नहीं बढ़ाना चाहिए ।

**श्री के० सी० पन्त** : जिस प्रकार से माननीय सदस्य इस वाद-विवाद को बढ़ा रहे है उसको मै नही चाहता था ।

**श्री जगदम्बी प्रसाद यादव** : महोदय, मैं प्रशांत जी के प्रश्न को दोहराना चाहता हू । सरकार ने एक बार यह तय किया था कि अब विश्वविद्यालयों के नाम किसी भी व्यक्ति के नाम मे नही होगे । सरकार ने यह भी तय किया था कि अब तक जो भी हो चुका है, सो हो चुका है लेकिन अब किसी भी विश्वविद्यालय का नाम किसी व्यक्ति के नाम मे नही रखा जायेगा । लेकिन इस बात को नजर-अंदाज करके अब सरकार ने इस बात को तय किया कि यह विश्वविद्यालय अरविन्दु के नाम से होना चाहिएए तो उसका कोई न कोई रास्ता सरकार को निकालना चाहिए था । जब यह तय है कि अरविन्दु घोष के नाम से हो तो जो कालिज या यूनिवर्सिटी है वह दो नाम से भी हो सकती है, ऐसा न होने की कोई बाध्यता नही है और ऐसा भी नही है कि दो नाम से यूनिवर्सिटी कंडैम हो जायेगी । दो नाम से होने से तो उसका और बड़ा नाम हो जायेगा, तो मैं जानना चाहता हूं कि सरकार इस पर क्यों विचार नही करती है ? जब सरकार की मान्यता है कि विश्वविद्यालय अरविन्दु घोष के नाम से हो और लोगों की मान्यता है कि सुब्रमण्यम भारती के नाम से हो तो वह इस विश्वविद्यालय को इन दोनों के नाम से क्यों नही करती है । दोनों ही महापुरुष है, इसमें कोई कन्ट्रोवर्सी भी नही है । दोनों ही महापुरुष है, दोनो के प्रति किसी को भी अश्रद्धा नहीं है । जो सुब्रमण्यम भारती के नाम से चाहते है उनको अरविन्दु के प्रति अश्रद्धा नही है इसी प्रकार अरविन्दु घोष के नाम से, चाहने वालों को सुब्रमण्यम के प्रति अश्रद्धा नही है । एक की वह जन्म भूमि नजदीक दक्षिण मे रही है और एक की कर्म भूमि रही है । इसलिये मै फिर सरकार से निवेदन करूंगा कि यदि इस सवाल पर सरकार दृढ़ता दिखलाये तो दोनों महापुरुषों का नाम जोड़कर दोनों के नाम से इस विश्वविद्यालय का नाम रखा जा सकता है । तो क्या सरकार इस पर विचार करेगी ?

**श्री के० सी० पन्त** : जो सवाल पहले किया था वही सवाल आपने भी किया है । मै बहुत अदब से यह कहूंगा कि एक तो इस विधेयक पर बहस होने वाली है उसमे आप अपनी राय रखेंगे ही! लेकिन दूसरी बात यह भी है कि इस चीज को इस वक्त बोलने मे मुझे कोई लाभ नही दिखता वहां पांडिचेरी के मुख्य मंत्री का पत्र आया था । वहां लोगों की बात हुई थी और हमारे दिल मे दोनों ही महापुरुषों के लिये बहुत गहरा आदर है । श्री अरविन्दु घोष और श्री सुब्रमण्यम भारती दोनों का अपना ऊंचा स्थान है हमारे देश मे । इसलिये जितना हम उनको वाद-विवाद मे न लाये उतना अच्छा हो । मै समझता हु कि इस दृष्टि-कोण से माननीय सदस्य भी सहमत होंगे । अगर कोई संभावना दूसरी रही होती है तो उसको करने में हमको खुशी होती । लेकिन जब कोई संभावना नही रह तो तब जाकर इस तरह का फैसला किया और मै समझता हूं कि आपका सहयोग इसमे होना चाहिए ।

## U.G.C. Report for fixation of Grades of Teachers

*25. SHRI LEONARD SOLOMAN SARING:†

SHRI M. BASAVARAJU:

Will the Minister of EDUCATION be pleased to state:

(a) whether Government have received any report from the University

†The question was actually asked on the floor of the House by Shri Leonard Soloman Saring.